Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

नई कहानी आंदोलन की संवेदनागत एवं शिल्पगत विशेषताएँ : योगदान, महत्व एवं समग्र मूल्यांकन

महीपाल दान* डॉ. राज बाला**

* शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर (राज.) भारत
** शोध निर्देशिका, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में नई कहानी आंदोलन एक महत्वपूर्ण साहित्यिक उपलब्धि के रूप में स्थापित हुआ। इस आंदोलन ने हिंदी कहानी को परंपरागत आदर्शवाद, घटना प्रधानता तथा सामाजिक यथार्थवाद से मुक्त करके आधुनिक जीवन-बोध, मनोवैज्ञानिक यथार्थ, अस्तित्वगत संकट, संबंधों के विघटन तथा मध्यवर्गीय चेतना को केंद्र में स्थापित किया। नई कहानी के रचनाकारों ने व्यक्ति के बाह्य जीवन की अपेक्षा उसके अंतर्जगत, अकेलेपन, संत्रास, कुंठा, मानसिक तनाव और सामाजिक विसंगतियों को अभिव्यक्ति दी। प्रस्तुत शोध-पत्र में नई कहानी आंदोलन की पृष्ठभूमि, संवेदनागत एवं शिल्पगत विशेषताओं, प्रमुख कहानीकारों, योगदान, महत्व तथा सीमाओं का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।
शब्द कुंजी – नई कहानी, आधुनिकता, मध्यवर्ग, संवेदना, शिल्प,अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषणवाद, आधुनिक जीवन-बोध।

प्रस्तावना – हिंदी साहित्य के इतिहास में कहानी विधा का विकास निरंतर परिवर्तनशील रहा है। प्रारंभिक कहानियाँ मनोरंजन तथा उपदेश की दृष्टि से लिखी जाती थीं, जबकि प्रेमचंद ने कहानी को सामाजिक यथार्थ से जोड़ा। किंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय समाज में तीव्र परिवर्तन हुए। स्वतंत्रता के बाद अपेक्षित सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक आदर्श साकार नहीं हो सके। परिणामस्वरूप व्यक्ति में मोहभंग, निराशा, असुरक्षा तथा अकेलेपन की भावना विकसित हुई।इन्हीं परिस्थितियों में हिंदी कहानी ने एक नई दिशा ग्रहण की जिसे 'नई कहानी आंदोलन' कहा गया। नई कहानी ने व्यक्ति के आंतरिक जीवन, मानसिक संघर्ष, दाम्पत्य संबंधों की जटिलता, अस्तित्वगत संकट तथा आधुनिक जीवन की विडंबनाओं को अपनी विषयवस्तु बनाया।डॉ. नामवर सिंह के अनुसार 'नई कहानी जीवन के नए यथार्थ और नई संवेदना की कहानी है।'[1]

1. नई कहानी आंदोलन की पृष्ठभूमि – नई कहानी आंदोलन के उद्भव के पीछे अनेक ऐतिहासिक, सामाजिक एवं साहित्यिक कारण रहे।

- **स्वतंत्रता के बाद का मोहभंग –** स्वतंत्रता के पश्चात जनता ने जिस आदर्श समाज की कल्पना की थी, वह साकार नहीं हो सकी। भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और राजनीतिक अस्थिरता ने व्यक्ति को निराश किया।
- **विभाजन की त्रासदी –** देश-विभाजन ने सामाजिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया।विस्थापन, असुरक्षा और भय की भावना साहित्य में भी अभिव्यक्त हुई।
- **औद्योगीकरण एवं नगरीकरण –** शहरी जीवन ने व्यक्ति को परिवार और समाज से दूर कर दिया। इससे अकेलेपन और अजनबीपन की भावना उत्पन्न हुई।
- **पाश्चात्य चिंतन का प्रभाव –** नई कहानी पर निम्न विचारधाराओं का प्रभाव पड़ा- अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषणवाद, आधुनिकतावाद, मार्क्सवाद।

2. नई कहानी आंदोलन का स्वरूप- नई कहानी आंदोलन हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण साहित्यिक आंदोलन है, जिसका उद्भव स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद 1950 के दशक में हुआ। यह आंदोलन बदलती हुई सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों की देन था। नई कहानी ने परंपरागत आदर्शवाद, घटनाप्रधानता तथा उपदेशात्मकता से हटकर आधुनिक जीवन की जटिलताओं, मध्यवर्गीय चेतना, मानवीय संबंधों के विघटन, अकेलेपन, संत्रास तथा अस्तित्वगत संकट को अपनी विषयवस्तु बनाया।

नई कहानी का स्वरूप मुख्यत: व्यक्तिनिष्ठ, मनोवैज्ञानिक तथा यथार्थवादी है। इसमें बाह्य घटनाओं की अपेक्षा व्यक्ति के अंतर्मन, मानसिक संघर्ष, कुंठा, घुटन तथा अकेलेपन को अधिक महत्व दिया गया है। इस आंदोलन ने कहानी को आधुनिक जीवन-बोध, नई संवेदना और नवीन शिल्प प्रदान किया। कथानक का ह्रास, सांकेतिकता, अंत:संवाद, चेतना-प्रवाह शैली तथा खुला अंत इसकी प्रमुख शिल्पगत विशेषताएँ हैं। डॉ.रामदरश मिश्र लिखते हैं 'नई कहानी ने आधुनिक मनुष्य के अकेलेपन, संत्रास और टूटते हुए संबंधों को स्वर प्रदान किया।'[2] नई कहानी किसी संगठन या संस्था का आंदोलन नहीं था। यह एक साहित्यिक चेतना थी।इसके प्रमुख कहानीकार हैं मोहन राकेश, राजेंद्र यादव, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा, मन्नू भंडारी, उषाप्रियंवदा, भीष्म साहनी। इन रचनाकारों ने व्यक्ति की आंतरिक पीड़ा, सामाजिक विघटन तथा मानसिक संघर्षों को कहानी का केंद्र बनाया।

3. नई कहानी की संवेदनागत विशेषताएँ

- **आधुनिक जीवन-बोध-** नई कहानी आधुनिक जीवन की समस्याओं का साहित्य है। इसमेंव्यक्ति की चिंता, तनाव, भय, असुरक्षा तथा विघटन का चित्रण मिलता है।
- **अस्तित्वगत संकट-** नई कहानी का व्यक्ति अपने अस्तित्व को लेकर चिंतित है। वह स्वयं को समाज से कटा हुआ अनुभव करता है।निर्मल वर्मा

की कहानियों में यह संवेदना अत्यंत तीव्र रूप में दिखाई देती है।डॉ. इंद्रनाथ मदान के अनुसार 'नई कहानी का व्यक्ति अपने अस्तित्व की रक्षा और पहचान की खोज में संघर्षरत है।'[3]

- **अकेलापन और अजनबीपन –** नई कहानी का पात्र भीड़ में रहते हुए भी अकेला है। पारिवारिक संबंध कमजोर हो गए हैं।
- **मध्यवर्गीय चेतना –** नई कहानी का प्रमुख पात्र मध्यवर्गीय व्यक्ति है, जो आर्थिक, सामाजिक और मानसिक समस्याओं से जूझ रहा है।
- **संबंधों का विघटन –** पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका तथा पारिवारिक संबंधों में तनाव और दूरी का चित्रण नई कहानी की प्रमुख विशेषता है। डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी के अनुसार 'नई कहानी ने मानवीय संबंधों की टूटन और उनके भीतर के तनाव को गहराई से अभिव्यक्त किया।'[4]
- **स्त्री संवेदना–** नई कहानी में स्त्री केवल सहायक पात्र नहीं है, बल्कि उसकी स्वतंत्र चेतना और अस्तित्व को महत्व दिया गया है।
- **मनोवैज्ञानिकता–** नई कहानी व्यक्ति के अंतर्मन का सूक्ष्म विश्लेषण करती है।मनोविश्लेषणवाद ने नई कहानी को गहराई प्रदान की। पात्रों की दमित इच्छाएँ, कुंठाएँ, मानसिक तनाव और अचेतन जीवन का चित्रण नई कहानी में व्यापक रूप से मिलता है।नई कहानीकारों ने व्यक्ति के मानसिक संघर्षों को कहानी का आधार बनाया। डॉ. बच्चन सिंह लिखते हैं 'नई कहानी ने व्यक्ति के अंतर्जगत और मानसिक यथार्थ को कहानी का केंद्र बनाया।'[5]
- **नई कहानी और अस्तित्ववाद–** अस्तित्ववाद का प्रभाव विशेष रूप से निर्मल वर्मा और मोहन राकेश की रचनाओं में दिखाई देता है।नई कहानी का पात्रअकेला है, असुरक्षित है, अर्थहीनता का अनुभव करता है, स्वयं की पहचान खोजता है।

4. नई कहानी की शिल्पगत विशेषताएँ– नई कहानी आंदोलन ने हिंदी कहानी के शिल्प को नई दिशा प्रदान की। इस आंदोलन के कहानीकारों ने परंपरागत कथानक, चरित्र-चित्रण और वर्णनात्मक शैली से हटकर आधुनिक जीवन की जटिलताओं को व्यक्त करने के लिए नवीन शिल्प-विधियों का प्रयोग किया। नई कहानी का शिल्प उसकी संवेदना के अनुरूप विकसित हुआ। इसकी प्रमुख शिल्पगत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- **कथानक का ह्रास–** नई कहानी में कथानक की अपेक्षा अनुभूति और मन:स्थिति को अधिक महत्व दिया गया है। घटनाएँ गौण हो जाती हैं और पात्रों की मानसिक स्थिति प्रमुख हो जाती है।डॉ. इंद्रनाथ मदान के अनुसार 'नई कहानी में घटना नहीं, बल्कि अनुभूति और मन:स्थिति अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।'[6]
- **अंत:संवाद –** नई कहानी में पात्र अपने भीतर चल रहे विचारों, द्वंद्वों और भावनाओं को स्वयं व्यक्त करता है। इससे पात्र के अंतर्मन का सूक्ष्म चित्रण संभव होता है।
- **चेतना-प्रवाह शैली–** नई कहानी में पात्र के विचारों, स्मृतियों और अनुभवों को बिना किसी तार्किक क्रम के प्रस्तुत किया जाता है। इस शैली के माध्यम से मन की स्वाभाविक गति को अभिव्यक्ति मिलती है।
- **सांकेतिकता और प्रतीकात्मकता –** नई कहानीकारों ने अपनी अनुभूतियों और विचारों को प्रतीकों एवं संकेतों के माध्यम से व्यक्त किया। प्रतीकों के द्वारा कहानी में गहन अर्थवत्ता उत्पन्न होती है।डॉ. रामदरश मिश्र लिखते हैं 'नई कहानी की भाषा प्रत्यक्ष से अधिक व्यंजनात्मक और सांकेतिक है।'[7]
- **खुला अंत –** नई कहानी किसी निश्चित निष्कर्ष पर समाप्त नहीं होती। कहानी का अंत पाठक के चिंतन के लिए खुला छोड़ दिया जाता है।
- **संक्षिप्तता और सघनता–** नई कहानी में अनावश्यक विस्तार नहीं मिलता। कम शब्दों में अधिक भावों और अनुभूतियों को व्यक्त करने का प्रयास किया जाता है।
- **सांकेतिक एवं व्यंजनात्मक भाषा–** नई कहानी की भाषा सरल होते हुए भी बहुअर्थी और व्यंजनात्मक होती है। उसमें संकेत, बिंब और प्रतीकों का व्यापक प्रयोग मिलता है।

5. प्रमुख नये कहानीकार

- मोहन राकेश- मानवीय संबंधों और अकेलेपन के कथाकार।प्रमुख कहानियाँ-मलबे का मालिक , एक और जिंदगी।
- राजेंद्र यादव – मध्यवर्गीय जीवन और दाम्पत्य तनाव के कथाकार। टूटना, जहां लक्ष्मी कैद है आदि इनकी प्रमुख कहानी है।
- कमलेश्वर- सामाजिक यथार्थ और आधुनिक जीवन की विसंगतियों के चित्रकार।राजा निरबंसिया, दिल्ली में एक मौत आदि इनकी प्रमुख कहानियां हैं।
- निर्मल वर्मा- अस्तित्ववादी संवेदना और अकेलेपन के कथाकार। परिंदे इनकी सर्वश्रेष्ठ कहानी है।
- मन्नू भंडारी- स्त्री चेतना की सशक्त कहानीकार। यही सच है इनकी प्रमुख कहानी है।

6. नई कहानी और स्त्री विमर्श– नई कहानी आंदोलन ने हिंदी साहित्य में स्त्री को एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में स्थापित किया। परंपरागत कहानियों में जहाँ स्त्री मुख्यत: त्याग, समर्पण और आदर्श नारी के रूप में चित्रित की जाती थी, वहीं नई कहानी में उसकी व्यक्तिगत भावनाओं, अस्तित्व-बोध, आत्मसम्मान, दाम्पत्य जीवन की समस्याओं तथा सामाजिक बंधनों को अभिव्यक्ति दी गई। इस आंदोलन की कहानियों में स्त्री केवल पुरुष की सहचरी न होकर अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं और अस्मिता के प्रति सजग दिखाई देती है।

मन्नू भंडारी, ऊषा प्रियवंदातथा कृष्णा सोबतीजैसी लेखिकाओं ने स्त्री-जीवन की जटिलताओं, दाम्पत्य संबंधों के तनाव, अकेलेपन और आत्मसंघर्ष को अपनी कहानियों का विषय बनाया। यही सच है, वापसी तथा सिक्का बदल गया जैसी कहानियाँ स्त्री-विमर्श की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।डॉ. नामवर सिंह के अनुसार 'नई कहानी ने व्यक्ति की स्वतंत्र सत्ता को स्वीकार किया, जिसमें स्त्री की अस्मिता भी शामिल है।'[8] इस प्रकार नई कहानी ने हिंदी साहित्य में स्त्री-चेतना और स्त्री-विमर्श को एक नई दिशा प्रदान की तथा स्त्री को उसकी स्वतंत्र पहचान और अस्तित्व के साथ प्रस्तुत किया।

7. नई कहानी और मध्यवर्ग– नई कहानी आंदोलन का सबसे प्रमुख आधार मध्यवर्गीय जीवन है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय मध्यवर्ग आर्थिक असुरक्षा, बेरोजगारी, पारिवारिक विघटन, नैतिक संकट तथा सामाजिक दबावों से जूझ रहा था। नई कहानीकारों ने इसी मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं, संघर्षों, कुंठाओं, अकेलेपन और टूटते हुए संबंधों को अपनी कहानियों का विषय बनाया।

नई कहानी का पात्र प्राय: शिक्षित, नौकरीपेशा, शहरी तथा मध्यवर्गीय व्यक्ति है, जो आर्थिक अभाव, दाम्पत्य तनाव, सामाजिक अपेक्षाओं और मानसिक असुरक्षा से घिरा हुआ है। इस कारण नई कहानी में मध्यवर्ग की पीड़ा, घुटन, संत्रास और अस्तित्वगत संकट का अत्यंत यथार्थ चित्रण मिलता

है।नई कहानी का मुख्य पात्र मध्यवर्गीय व्यक्ति है।

8. नई कहानी का योगदान:

- आधुनिक संवेदना का विकास।
- व्यक्ति को केंद्र में स्थापित किया।
- मनोवैज्ञानिक यथार्थ को महत्व दिया।
- स्त्री चेतना को स्वर प्रदान किया।
- भाषा एवं शिल्प में नवीनता लाई।
- मध्यवर्गीय जीवन की अभिव्यक्ति की।
- कथानक के स्थान पर अनुभूति को महत्व दिया।

9. नई कहानी का महत्व– हिंदी साहित्य के इतिहास में नई कहानी आंदोलन का विशेष महत्व है, क्योंकि इसने कहानी को नई संवेदना, आधुनिक जीवन–बोध तथा नवीन शिल्प प्रदान किया। नई कहानी ने परंपरागत आदर्शवाद और घटनाप्रधानता से हटकर व्यक्ति के अंतर्मन, मानसिक संघर्ष, अकेलेपन, संबंधों के विघटन तथा मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं को अभिव्यक्ति दी। इस आंदोलन ने कहानी को आधुनिक युग की सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक वास्तविकताओं से जोड़कर उसे अधिक यथार्थवादी और प्रासंगिक बनाया।

नई कहानी का सबसे बड़ा महत्व यह है कि उसने व्यक्ति की आंतरिक पीड़ा, अस्तित्वगत संकट और बदलते मानवीय संबंधों को साहित्य का केंद्र बनाया। साथ ही, इसने भाषा, शिल्प, प्रतीकात्मकता, अंत:संवाद तथा चेतना–प्रवाह जैसी नवीन अभिव्यक्ति–विधियों को भी विकसित किया।डॉ. नामवर सिंह के अनुसार 'नई कहानी हिंदी कहानी के विकास की एक ऐतिहासिक उपलब्धि है।'[9] नई कहानी ने हिंदी साहित्य को आधुनिक चेतना प्रदान की।

10. नई कहानी की सीमाएँ:

- अत्यधिक व्यक्तिवाद।
- मध्यवर्ग तक सीमितता।
- कथानक की उपेक्षा।
- दुरूहता।
- निराशा की अधिकता।

11. समकालीन प्रासंगिकता के संदर्भ में नई कहानी– नई कहानी आज भी अपनी विषयवस्तु और संवेदना के कारण अत्यंत प्रासंगिक है। आधुनिक जीवन में बढ़ता हुआ अकेलापन, मानसिक तनाव, पारिवारिक विघटन, संबंधों में दूरी, आर्थिक असुरक्षा तथा अस्तित्वगत संकट आज भी मानव जीवन की प्रमुख समस्याएँ हैं। नई कहानी ने जिन समस्याओं को उठाया था, वे वर्तमान समाज में भी विभिन्न रूपों में विद्यमान हैं।

नई कहानी का पात्र आधुनिक मनुष्य का प्रतिनिधि है, जो भीड़ में रहते हुए भी अकेला है तथा अपने अस्तित्व, संबंधों और पहचान के संकट से जूझ रहा है। इसी कारण नई कहानी की संवेदना आज के पाठक के लिए भी उतनी ही अर्थपूर्ण और प्रासंगिक है जितनी उसके आरंभिक काल में थी।इसलिए नई कहानी की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

उपसंहार– नई कहानी आंदोलन हिंदी साहित्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण साहित्यिक उपलब्धि है। इस आंदोलन ने कहानी को नई संवेदना, नया शिल्प तथा आधुनिक जीवन–बोध प्रदान किया। इसने व्यक्ति के आंतरिक जीवन, मानसिक संघर्ष, संबंधों के विघटन तथा अस्तित्वगत संकट को अभिव्यक्ति दी।मोहन राकेश, राजेंद्र यादव, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा तथा मन्नू भंडारी जैसे कहानीकारों ने हिंदी कहानी को आधुनिकता के धरातल पर प्रतिष्ठित किया।अत: कहा जा सकता है कि नई कहानी आंदोलन हिंदी साहित्य की एक युगांतरकारी उपलब्धि है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. डॉ. नामवर सिंह, कहानी : नई कहानी, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, पृ. 23।
2. डॉ. रामदरश मिश्र, हिंदी कहानी : अंतरंग पहचान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 72।
3. डॉ. इंद्रनाथ मदान, नई कहानी : स्वरूप और समस्याएँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 41।
4. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिंदी आलोचना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 144।
5. डॉ. बच्चन सिंह, आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, पृ. 315।
6. डॉ. इंद्रनाथ मदान, नई कहानी : स्वरूप और समस्याएँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 76।
7. डॉ. रामदरश मिश्र, हिंदी कहानी : अंतरंग पहचान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 85।
8. डॉ. नामवर सिंह, कहानी : नई कहानी, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, पृ. 85।
9. वही, पृष्ठ सं. 102।

****